بسم الله الرحمن الرحيم

إن الدين عند الله الإسلام

لا إله إلا الله محمد رسول الله

हज़रत मुहीउद्दीन अल ख़लीफ़तुल्लाह मुनीर अहमद अज़ीम (अ स)

04 October 2019
05 Safar 1441 AH

अनुवादक : फातिमा जास्मिन सलीम
EMAIL:fjasmine14@gmail.com

जुम्मा खुतुबा

विषय:-

“अल -हुजरत: ग़ीबत (भाग-4)”

अपने सभी चेलों सहित सभी नए चेलों, (और दुनिया भर के सभी मुसलमानों) को शांति का अभिवादन करने के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल्लाह (अ त ब अ) ने तशहुद ,तौज, सूरह अल फातिहा पढ़ा और फिर उन्होंने अपना उपदेश दिया : अल -हुजरत: ग़ीबत (भाग 4)

सबसे पहले, मैं अल्लाह को शुक्रिया अदा करता हूँ कि मुझे शुक्रवार उपदेश के मेरे विषय में जारी रहने के लिए तौफीक दी, जिसे मैंने तीन सप्ताह के पहले शुरू किया था। पिछले शुक्रवार के मेरे धर्मोपदेश में, मैंने आपको निज़ाम-ए-जमात के लिए काम करने वालों के प्रति मुहब्बत को उत्पन्न करने के लिए कहा था (जो अल्लाह का कार्य करते हैं।

अगर आपको अल्लाह से सच्चा प्यार है, और हज़रत मुहम्मद (स अ व स), हज़रत मसीहे मोद (अ.स.), इस युग के अल्लाह के खलीफा (ख़लीफ़तुल्लाह) के लिए थोड़ा - थोड़ा सा प्यार है, अतः स्वाभाविक रूप से आप उन लोगों से भी प्यार करेंगे, जो जमात (जमात के अधिकारियों) के लिए काम करते हैं। किसी के लिए यह संभव नहीं है की वह संगठन के प्रति अभिमानी या तटस्थ रहे, जिसका लोगों के साथ संबंध है, मैंने पिछले शुक्रवार को मेरे उपदेश में इसका उल्लेख किया है। यह संभव नहीं है कि आप जमात के खिलाफ बोलें, और ठिठोली करें और उन जिम्मेदारी वाहकों को दोषी ठहरायें (यानी, उनके खिलाफ "ग़ीबत" करें)। यह आपके लिए स्वीकार्य नहीं है की आप जमात (यानी, जमात के खिलाफ बोलना) के खिलाफ, जमात के साथ चुगली कर रहें हैं। **[यह एक सामान्य कथन है, जो मैं कह रहा हूँ, ताकि जमात उल सहिह अल इस्लाम के सभी सदस्य और अन्य सभी मुसलमान ऐसी बुराइयों से दूर रहें। मैरे अपने अतीत के अनुभव से जो मुझ पर बीता है, मैं आपको इसके खिलाफ चेतावनी देना चाहूँगा, ताकि जमात उल सहिह अल इस्लाम इन बुराईयों से मुक्त रहें। मैं यह सब, आप ही के हित के लिए कह रहा हूँ, और भले ही, आप इस विनम्र सेवक पर विश्वास न करें, लेकिन इस संदेश को आप अपने अच्छे के लिए लें।]**

वहाँ न केवल झूटी निंदा होती है, बल्कि पाखंडीपन भी मौजूद हैं [जो चुगली से जुड़ा होता है - एक गट्ठरी की तरह], और यह थोड़ा - थोड़ा करके विद्रोह भी बन जाएगा और आप किसी पर झूठे आरोप लगाने की आदत विकसित करोगे। यह सब एक ही प्रवर्ग में आते है। जब हम "ग़ीबत" के बारे में बात करते हैं, इसमें वह सब भी शामिल है (पाखंड, विद्रोह, दोष आदि)। ये सभी एक जैसी बीमारियां हैं, और जो साथ - साथ चलती हैं। अतः, यह मत सोचो कि किसी के पीठ के पीछे किसी के बारे में बात करना एक साधारण विषय है। आपको गपशप / चुगली से बहुत दूर रहना चाहिए। और एक तरीका यह है, कि मुहब्बत के रिश्ते को बढ़ाना [दूसरों के साथ]। जहाँ तक निज़ाम-ए-जमात का सवाल है, आपको प्यार होना चाहिए - मुहब्बत - जो अल्लाह के लिए आपके प्यार के साथ बाध्य है। यह एक बहुत ही स्पष्ट

मामला है। लेकिन सामान्य रूप से जहाँ तक जमात उल सहिह अल इस्लाम के सदस्यों का सवाल हैं, आपके पास उनके लिए भी प्यार होना चाहिए, अर्थात् जो इस्लाम - मुसलमानों से संबंधित हैं।

हज़रत मुहम्मद (स अ व स) ने हमें बार-बार सलाह दी है और उन्होंने कहा है, कि एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान के साथ ऐसा दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए। एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को चोट नहीं पहुँचाना चाहिए। इसके पहले, मुझे हज़रत मुहम्मद (स अ व स) के इस कहावत से थोड़ी हैरानी हुई, जो पूरे ब्रह्मांड के लिए एक दया (रहम) रखने वाले थे। मुझे आश्चर्य हुआ, कि उन्होंने केवल मुसलमानों के लिए लाभ का उल्लेख क्यों किया? उन्होंने क्यों कहा कि एक मुसलमान को दूसरे मुसलमान से ऐसा बर्ताव करना चाहिए - बेहतर बर्ताव? परंतु जब मैंने इसके बारे में सोचा, तो मैंने महसूस किया कि यह सलाह का एक बहुत अच्छा भाग था, जो उन्होंने मुसलमानों को दिया। इस अच्छी सलाह के बावजूद, लेकिन क्या कोई मुसलमान आज इसे ध्यान में ले रहा है? इसके विपरीत, वे एक दूसरे को मार रहे हैं, और उन्हें अपने भाइयों के लिए घृणा, ईर्ष्या है, और फिर वे पवित्र पैगंबर (स अ व स) के लिए मुहब्बत हैं कहने की हिम्मत करते हैं!

पैगंबर की यह सलाह वास्तव में सुंदर और महत्वपूर्ण है क्योंकि पैगम्बर कि आँखों में, एक मुसलमान को बिल्कुल और आवश्यक रूप से, दूसरे मुस्लमान भाई के साथ एक अच्छा संबंध रखना चाहिए। और प्यार के इस रिश्ते को ज्यादा या कम किया गया है, जैसे ही मुसलमान खुद को अन्य मुसलमानों के घेरे से बाहर महसूस करता है। वहाँ ये रिश्ता जरूर है, लेकिन वह कमजोर है।

इसलिए, जब यह सलाह दी जाती है, तो उन्हें सबसे मजबूत रिश्ते के संदर्भ में दिया जाता है। इसका मतलब सिर्फ यह नहीं है, कि आप दूसरे मुसलमानों को चोट नहीं पहुंचाएंगें, लेकिन आपको आपके पड़ोसी / साथी मुसलमान भाई जो आपकी तरह समान विश्वास रखते हैं और समान क़दर करते हैं, उनको चोट पहुँचाने के इस विचार से आपको दूर रहना चाहिए! इसका मतलब यह है, कि एक मुसलमान के लिए दूसरे मुसलमान को नुकसान पहुंचाने का विचार करना भी असंभव है। और, यदि आप कभी भी किसी दूसरे मुसलमान को नुकसान पहुंचाते हैं, तो यह निश्चित रूप से, एक पाप है और आप खुद को मुस्लमान नहीं कहल्वा सकते।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है, कि आप गैर-मुसलमानों को नुकसान पहुंचा सकते हैं! नहीं **[आप किसी को चोट नहीं पहुंचा सकते, चाहे वह मुसलमान हो या नहीं]।** इस विषय पर अन्य हदीसें हैं, ऐसे हदीस जहाँ पर इस्लाम [अर्थात मुसलमानों] का उल्लेख नहीं है, लेकिन सामान्य रूप से, मानवता के अधिकार उल्लेखित है। और वहाँ सिर्फ मनुष्य के अधिकारों का उल्लेख नहीं है, लेकिन जानवरों के अधिकारों का

भी उल्लेख किया गया है। यह उल्लेख किया गया है, कि जानवरों के प्रति भी, हमें उनके साथ उत्कृष्ट व्यवहार करना चाहिए। इन हदीसों में, वहाँ ऐसे सलाहकार हैं, जहाँ हज़रत मुहम्मद (स अ व स) ने किसी व्यक्ति को भी कहा था: "निर्णय के दिन आपके पास देने के लिए एक खाता होगा, इस बर्ताव के लिए जो आप इस ऊंट के साथ कर रहे हैं। जिस तरह से यह ऊंट शिकायत कर रहा है, जैसे यह आपके खिलाफ शिकायत कर रही हो ", और उस व्यक्ति ने तुरंत ऊंट को रिहा कर दिया। उसने पश्चाताप किया। उसने उसे रिहा कर दिया और फैसला किया कि वह कभी ऊंट को चोट नहीं पहुंचाएंगा। यह तब था, जब हज़रत मुहम्मद (स अ व स) ने उसे बताया, कि अगर उसने ऊंट को रिहा नहीं किया होता, तो अल्लाह ने उसे सज़ा दी होती।

यहाँ तक कि, जब उन्होंने एक पक्षी के दर्दनाक रोने की आवाज़ सुनी, तो हज़रत मुहम्मद (स अ व स) परेशान हो गए थे। एक दिन, वह अपने तम्बू से बाहर आए और उन्होंने पूछा कि मादा पक्षी को किसने चोट पहुंचाई है? यह ऐसा लगा, कि किसी ने उसके छोटे बच्चे को या उसके अंडे को उठा लिया है। और वास्तव में, यह ही हुआ था [एक अवसर पर, सहाबा ने एक चिड़िया के दो छोटे बच्चों को उठा लिया था] जब उस व्यक्ति ने - सभी सहाबा के बीच - जिसने एक चिड़िया के दो छोटे बच्चों को उठा लिया था, उसे उस चिड़िया के घोंसले में वापस डाल देने के लिए कहा गया, यह तब था, जब हज़रत मुहम्मद (स अ व स) को राहत मिली थी। ऐसे थे हज़रत मुहम्मद (स अ व स), **रहमतुल -लिल -आलमीन!**

इसलिए, अभिव्यक्ति को परिभाषित करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली शब्द नहीं है: **रहमतुल - लिल - आलमीन**, क्योंकि यह उपाधि अल्लाह के द्वारा पवित्र पैगंबर (स अ व स) को दिया गया है और यह नाज़ूक फ़र्कों से निराले अर्थों में दर्शाया गया हैं। हम इसे केवल एक अर्थ नहीं दे सकते। इसलिए, जब मुसलमानों को ज़िक्र किया जाता है, तो यह उनके आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त करने का एक शानदार तरीका है क्योंकि वे सभी पहले से ही मज़बूती से जुड़े हुए थे, और एक अच्छी तरह से स्थापित हुए रिश्ते (मुसलमानों के बीच) रखते हैं। और उसी भावना में, इस पद कि विस्तृत भावना में, फिर हम देखते हैं कि "ग़ीबत" (चुगली) का विषय भी हमारे ध्यान के योग्य है।

इसको अच्छी तरह से समझना बहुत आसान है, जैसा कि, इसे समझना आसान है की जो अल्लाह के जमात के लिए, अल्लाह के दीन (धर्म) के लिए, अल्लाह के कार्य के लिए शरीर और आत्मा की तरह काम करते हैं, उन लोगों के खिलाफ नहीं बोलना चाहिए। आपको मुसलमानों से बुरा व्यवहार करने का कोई अधिकार नहीं है। सामान्य तौर पर, एक मुसलमान का मजाक उड़ाना पाप है, जो और भी बुराई कि ओर बढ़ता है। इसलिए, एक मुसलमान को उन उत्कृष्ट तरीकों का उपयोग करना चाहिए, जो हमारे सज्जन नबी (स अ व स) ने अभ्यस्त किए हैं और उसका प्रदर्शन किया और यह आवश्यक नहीं है, कि एक मुसलमान खुद को इस उत्कृष्ट संबंध से वंचित रखे, जो उसे अपने मुसलमान भाइयों के साथ होना

चाहिए। और उसके लिए, आपको अल्लाह (स व त) और उसके रसूल के प्यार के संदर्भ के रूप को लेना चाहिए और फिर, इसके बाद में आप दृढ़ता से सभी मुसलमानों के साथ इस प्यार को स्थापित करें और सिवाय इसके, आप इस प्यार को सामान्यीकरण करते हैं, जहाँ आप इसे न केवल मुसलमानों के बीच फैलाते हैं, बल्कि, पूरी मानवता के प्रति भी इसका प्रसार करते हैं। जिस तरह से, मुसलमानों को हज़रत मुहम्मद (स अ व स) का प्यार प्राप्त हुआ, [अब] शायद उनके साथ आपका संपर्क नहीं है (यानी, मुसलमानों का), लेकिन आप हज़रत मुहम्मद (स अ व स) के लिए कुछ प्यार रखने का दावा करते हैं। और अगर आपके पास वह प्रेम है, तो कुरान कहता है कि हज़रत मुहम्मद (स अ व स) मुसलमानों के साथ, विशेष रूप से बहुत लचीले थे; वह मुसलमानों के प्रति रउफ (Ra'uf) थे; उनके पास उनके लिए बहुत प्यार और कोमलता थी, और वह उनके प्रति रहीम (Rahim) भी थे, अर्थात हर बार वह उनके प्रति दयालु थे, वह उन के लिए तरस रखते थे।

अब अगर, आपको हज़रत मुहम्मद (स अ व स) से प्यार है, तो आपको भी उन सभी के लिए प्यार होना चाहिए, जिन्हें हज़रत मुहम्मद (स अ व स) प्यार करते थे। वास्तव में, हज़रत मुहम्मद (स अ व स) उनके दिल की स्थिति को अच्छी तरह से जानते थे। वह जानते थे, कि वहाँ उनमें कोई कमियां नहीं थी। उनके पास कभी भी दूसरों के प्रति बुरे विचार नहीं थे, जिनका नफ़रत के साथ कोई संबंध था और उन्होंने कभी भी भड़कीलेपन का अभ्यास नहीं किया। उनके लिए, कोई बड़े संकेत या बिल्ले नहीं थे, जो लोगों को यह दिखाने के लिए कि उनके पास **"सभी के लिए प्यार और नफ़रत किसी के लिए नहीं थी।"!**

और इसके अलावा, उन्होंने बहिष्कार लागू करने के ज़रिए, लोगों के दिलों में नफ़रत को नहीं बोया। उन्होंने किसी कि चुगली नहीं की, और कभी भी पारिवारिक संबंधों को नहीं तोड़ा। उनके दिनों में, उनके पास साथी(सहाबा) थे, जिनके माता-पिता मुस्लमान विश्वासी नहीं थे, लेकिन उन्होंने कभी भी उन्हें ऐसा आदेश नहीं दिया: पारिवारिक संबंधों को तोड़ो - खून के रिश्ते, उनका बहिष्कार करो, उन्हें मिलना बंद करो। उन्होंने कभी भी उनके परिवारों या मित्रों के खिलाफ मुसलमानों के दिलों में नफ़रत नहीं जगाई, जो उनके संदेश पर विश्वास नहीं करते थे। लेकिन कभी-कभी एक निश्चित उद्देश्य के साथ, उन्हें कुछ चीज़ों का जिक्र करना पड़ा और वह सब झूटी निंदा नहीं थी। वह घृणा और बहिष्कार आदि की भाषा नहीं बोलते थे, उन्होंने किसी को भी किसी के पीठ के पीछे बुरी बात करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया। नहीं !

इसलिए, हमें भी सभी लोगों, चीजों और जानवरों के लिए प्यार होना चाहिए, जिनसे हज़रत मुहम्मद (स अ व स) ने प्यार किया था। इसके संदर्भ में, सभी मुस्लमान आपसे उम्मीद करते हैं की आप उन्हें रउफ (Ra'uf) और रहीम की विशेषता के अनुसार उनसे बर्ताव करेगें, क्योंकि आप हज़रत मुहम्मद (स अ व स) से प्यार का दावा करते हैं, जो रउफ और रहीम थे।

तो, इस अर्थ में, कि जब आप अपने रिश्ते को अच्छाई के आधार पर स्थापित करते हैं, तो आपके अच्छे कर्म सभी मुसलमानों पर एक प्रतिबिम्ब की तरह बन जाएंगे [एक सुरक्षा के रूप में] और इस प्रतिबिम्ब के नीचे, "ग़ीबत" (चुगली) का पौधा भी बढ़ा नहीं पाएंगें! वहाँ कुछ पौधे हैं, जो निश्चित परछाई के नीचे मर जाते हैं। जब रउफ (Ra'uf) और रहीम के गुणों के संपर्क के साथ अंदर डाला जाएगा, "ग़ीबत"(चुगली) का पौधा भी विकास / प्रसार करने में सक्षम नहीं होगा।

इसलिए, यह "ग़ीबत"(चुगली) से बचने का एक तरीका है। फिर, विस्तृत शब्दों में, मानवता को पूर्ण मानते हुए, और यह **रहमतुल-लिल अल्मीन** के संदर्भ में है, तो आपको प्रत्येक मानवता के प्रति अच्छे संबंध बनाने होंगे। आपके पास कोई विकल्प नहीं है, और इस स्थान पर भी मैं बनावटी प्रेम का उल्लेख नहीं कर रहा हूँ। नहीं। बनावटी प्रेम कि कोई वास्तविकता नहीं है। यह एक पवित्र ढोंग है, बस इतना ही। लेकिन मानवता के लिए सच्चा प्यार पाना, एक बहुत गहरी बात है। इसे प्राप्त करने के लिए एक प्रकार के "जिहाद" (लड़ाई / संघर्ष) को लेना पड़ता है। अब आपको "जिहाद" (लड़ाई / युद्ध) और "मुहब्बत" (प्रेम) शब्द को एक साथ जोड़ना नहीं है। नहीं! जो बात, मैं आपको बताना चाहता हूँ, वह यह है कि हज़रत मुहम्मद (स अ व स) का स्वाभाविक प्रेम मानव जाति के लिए था, चूंकि उनका अल्लाह से सीधा संबंध था, और वह प्रेम अल्लाह से सीधे आ रहा था, इसलिए यह उनके लिए ज़रूरी नहीं था, उसके लिए [दूसरों के साथ] लड़ें।

मुझे, अब यहाँ रुकना होगा। अल्लाह की कृपा से, यह स्पष्टीकरण बारिश की तरह नीचे आ रहे हैं, और इंशा-अल्लाह यह स्पष्टीकरण / बारिश (आशीर्वाद से) अगले सप्ताह जारी रहेगा। अल्लाह (स व त) सबसे अच्छी तरह जानता है कि इस विषय पर कितने और उपदेश होंगे। इंशा अल्लाह।

आशा हैं, अल्लाह आप सब पर अपनी दया बरसाए और आपके नफ़्स (जुनून/ अहंकार) से लड़ने में आपकी मदद करे, और आपके और आपके मुस्लमान भाइयों और बहनों के बीच अच्छे संबंध स्थापित करे, और जो, इसके अलावा, आपकि तरह एक ही जमात में हैं, अल्लाह का जमात। और आशा हैं, अल्लाह आपको अपने भाइयों और बहनों के लिए इस दया को विकसित करने में मदद करे और चुगली से दूर रहने के लिए अपनी लड़ाई में आपकी मदद करे और सभी बुराईयां जो इस्लाम और मानवता की छवि को कलंकित कर सकती हैं, जो अल्लाह ने आप के अंदर रखा है।

इंशा-अल्लाह, अमीन।